दृष्टि विज्ञान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

दृष्टि का अर्थ है देखना। बाहर देखिए या बाहर देखिए इसका एक विज्ञान होना चाहिए। विज्ञान किसी भी वस्तु का विशिष्ट ज्ञान कहलाता है। इस संसार में जड़ और चेतन दो तत्व हैं। चेतन तत्व सुख–दुःख की अनुभूति करता है। चेतन तत्व प्रजनन करता है। जड़ तत्व स्वयं कोई क्रिया नहीं करता। चेतन के माध्यम से यह क्रिया करता है। शरीर आत्मा के द्वारा संचालित होता है। आत्मा के निकल जाने पर यह जड़ हो जाता है। शरीर जड़ है, यह पंचभूतात्मक है। इसमें परिवर्तन होता रहता है। आत्मा एक ऐसा तत्व है जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। आत्मा एक रंग, एक रूप और एक रस वाला है। चेतना की परिणति चेतना में ही होती है। शरीर की परिणति पंचभूतों में हो जाती है। इस तथ्य को समझना यथार्थ दृष्टि है। जड़ और चेतन को एक समझना अज्ञान है।

सही दृष्टि का अर्थ है राईट विजन अर्थात दृष्टि का सम्यक होना। हमारी धारणा सही होनी चाहिए। वास्तविकता को समझना चाहिए। तभी सही दिशा में प्रगति होती है। सही सोच का अर्थ है विधायक भाव होना। सम्पूर्ण सृष्टि में चौरासी लाख जीव यौनियों के प्राणी रहते हैं। सबकी व्यवस्था प्रकृति करती है। सही दृष्टि यह है तकि इनके अस्तित्व का बोध हमें होना चाहिए। इस सृष्टि में दो मूल तत्व है– जीव और अजीव। जिसे सुख–दुःख की अनुभूति होती है, जिसमें हलन–चलन की क्रिया होती है, जिसमें चेतना रहती है वह जीव कहलाता है। जड़ पदार्थ अचेतन कहलाता है। इसमें पुद्गल की गणना होती है। परमाणुओं के मेल से सृष्टि बनती है। चेतन तत्व के अस्तित्व को समझना, अनुभव करना आवश्यक है। कर्मों के अनुसार सभी को शरीर को प्राप्ति होती है।

चेतन साध्य है और जड़ पदार्थ साधन है। जड़ और चेतन के सहयोग से सृष्टि चलती है। प्रणीमात्र को चेतन को कष्ट नहीं देना चाहिए। यही सही दृष्टि, सही सोच है। जब दृष्टि सम्यक रहती है तो सोच भी सही हो जाती है। बिना दृष्टि के सही हुए वस्तु के अस्तित्व का ज्ञान नहीं हो सकता। नशे में धुत व्यक्ति वस्तु के अस्तित्व का ज्ञान नहीं कर सकता। वह

मदमस्त रहता है। उसकी दृष्टि और उसकी सोच सही नहीं हो सकती। किन्तु एक सामान्य व्यक्ति सही दृष्टि और सही सोच वाला होता है। मानव को अपने समान अन्य प्राणियों के अस्तित्व को स्वीकार करना चाहिए। उसे यह महसूस करना चाहिए कि जैसे मेरा अस्तित्व है वैसे ही संसार के सभी प्राणियों का भी अस्तित्व है। यही अहिंसा बोध है। जब व्यक्ति में यह बोध आ जाता है तो उसकी दृष्टि और सोच सही हो जाती है।

सही दृष्टि और सही सोच के कारण समस्याओं का समाधान स्वयं हो जाता है। मानव अनेक समस्याओं को इसलिए पैदा कर लेता है कि उसे अस्तित्व बोध नहीं रहता। आज सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण प्रदूषण की है। यह समस्या सही दृष्टि और सही सोच नहीं होने के कारण है। हमें वस्तुओं का उतना ही उपयोग करना चाहिए जितना आवश्यक है। मानव में परिग्रह की भावना इतनी अधिक हो गयी है कि उसकी दृष्टि और सोच ही बदल गयी है।

अनावश्यक रूप से पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ करके पर्यावरण को प्रदूषित किया जा रहा है जिससे समस्याएं बढ़ती चली जा रही हैं। इन सब समस्याओं के पीछे मनुष्य की सोच ही कार्य कर रही है। यदि दृष्टि सही रहे तो दिशा अपने आप मिल जाती है। दिशाबोध होना आवश्यक है। यदि हम कहीं यात्रा करते हैं तो गंतव्य तक पहुंचने के लिए सही मार्ग चुनना पड़ता है। यदि सही मार्ग नहीं पकड़ेंगे तो हम कहीं दूसरी जगह पहुंच जायेगें। इसलिए सही दृष्टि और सही सोच को होना आवश्यक है।

मानव को षड़्जीव निकाय का बोध होना चाहिए। षड्जीवनिकाय का सूक्ष्म विवेचन दर्शन में किया गया है। षड्जीवनिकाय के अन्तर्गत पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवों की गणना होती है। जैन दर्शन में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति को जीव माना गया है। ये सभी मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं तथा संतुलन बनाये रखने के लिए एक—दूसरे को प्रभावित करते हैं। किसी एक तत्त्व के असंतुलन से समूचा पर्यावरण प्रभावित होता है। विवेकी मनुष्य, पृथ्वी, जल आदि की हिंसा के परिणाम को जानकर न स्वयं इनकी हिंसा करें, न दूसरों से इनकी हिंसा करवाए और न ही हिंसा करने वालों का अनुमोदन करें।

पृथ्वी, जल आदि की हिंसा करने वाला केवल इनकी ही हिंसा नहीं करता अपितु इनके आश्रित अनेक त्रस जीवों की भी हिंसा करता है। पृथ्वी ही जिनका शरीर है ऐसे जीवों को पृथ्वीकायिक जीव कहा जाता है। जल में रहने वाले जीव, जैसे मछली एवं अन्य प्राणी उस प्रदूषण से प्रभावित होते हैं। उन्हीं जंतुओं का प्रयोग जब मनुष्य खाने के लिए करता है तो वह विषाक्त भोजन अनेक बीमारियों का कारण बनता है। अग्निकाय का असंयम करने से ऊर्जा के स्रोत कम हो रहे हैं। इससे उद्योग, चिकित्सा आदि सभी क्रियाकलाप प्रभावित हो रहे हैं। वायु–प्रदूषण में भी अग्निकाय का असंयम ही अधिक निमित्त बन रहा है। इस प्रकार पृथ्वी, जल आदि की हिंसा आध्यात्मिक दृष्टि से ही नहीं, पर्यावरण की दृष्टि से भी अवांछनीय है। सही दृष्टि के कारण सर्वत्र जीव का दर्शन होता है।